International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

गंदी बस्ती के बच्चों में कुपोषण की स्थिति का एक अध्ययन

मंजुलता अग्रवाल[1], डॉ. मीरा देवांगन[2]

1शोधार्थी, 2शोध निर्देशक, सहायक प्राध्यापक (समाजशास्त्र विभाग)
भारती विश्वविद्यालय, दुर्ग (छ.ग)

शोध-सार

प्रस्तुत अध्ययन में दुर्ग जिले की शहरी गंदी बस्तियों में रहने वाले बच्चों में व्याप्त कुपोषण की स्थिति का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन में कुल 250 बच्चों को सम्मिलित किया गया जिनकी आयु 0 से 6 वर्ष के बीच थी। आंकड़ों का संग्रह स्वास्थ्य जांच, ऊँचाई-भार मापन, माता-पिता से साक्षात्कार और आहार संबंधी जानकारी के आधार पर किया गया। विश्लेषण हेतु विश्व स्वास्थ्य संगठन के बाल वृद्धि मापदंडों का उपयोग किया गया। परिणामों से यह स्पष्ट हुआ कि गंदी बस्तियों के बच्चों में 60 प्रतिशत तक बच्चे किसी न किसी रूप में कुपोषण का शिकार हैं, जिनमें गंभीर कुपोषण, अल्पवज़न और ऊँचाई की कमी जैसे लक्षण प्रमुख रूप से पाए गए। अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि पारिवारिक आय, माता की शिक्षा, पोषण जागरूकता और आंगनबाड़ी सेवाओं की स्थिति कुपोषण को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। यह शोध नीति-निर्माताओं एवं स्वास्थ्यसेवकों के लिए शहरी निर्धन बच्चों के पोषण स्तर में सुधार हेतु दिशा-निर्देश प्रदान कर सकता है।

भूमिका

भारत में कुपोषण एक गंभीर सामाजिक एवं स्वास्थ्य समस्या के रूप में उभरकर सामने आई है, विशेषकर शहरी गंदी बस्तियों में रहने वाले बच्चों के बीच। सामाजिक, आर्थिक, एवं पारिवारिक असमानताओं के कारण इन बस्तियों में बच्चों का स्वास्थ्य उपेक्षित रहता है। बाल्यावस्था में पर्याप्त पोषण का अभाव न केवल शारीरिक विकास को बाधित करता है बल्कि मानसिक विकास को भी प्रभावित करता है। दुर्ग जिले की गंदी बस्तियाँ भी इस समस्या से अछूती नहीं हैं, जहाँ बड़ी संख्या में बच्चे जीवन के प्रारंभिक वर्षों में ही कुपोषण के शिकार हो जाते हैं।

यह अध्ययन दुर्ग जिले की गंदी बस्तियों में निवासरत 0 से 6 वर्ष के बच्चों में कुपोषण की स्थिति को जानने, उसके कारणों को समझने और संभावित समाधान सुझाने का प्रयास है। यह शोध नीति निर्माताओं, स्वास्थ्यकर्मियों तथा सामाजिक कार्यकर्ताओं के लिए एक महत्वपूर्ण दस्तावेज के रूप में कार्य करेगा।

संबंधित शोध का पुनरावलोकन

वर्मा एवं सिंह (2016) ने उत्तर प्रदेश की शहरी गंदी बस्तियों में 150 बच्चों पर किए गए अध्ययन में पाया कि लगभग 65 प्रतिशत बच्चे कुपोषण से ग्रसित थे। उन्होंने माता की शिक्षा एवं पारिवारिक आय को प्रमुख निर्धारक माना। मिश्रा (2017) ने दिल्ली की झुग्गियों में किए गए अपने अध्ययन में यह दर्शाया कि एकतरफा भोजन, स्वच्छता की कमी और अव्यवस्थित जीवनशैली बच्चों की पोषण स्थिति को नकारात्मक रूप से प्रभावित करती है।

शुक्ला एवं वाजपेयी (2018) द्वारा भोपाल में किए गए अध्ययन में यह तथ्य सामने आया कि आंगनबाड़ी केंद्रों की सेवाएँ नियमित नहीं होने के कारण अधिकांश बच्चों को पर्याप्त पोषण नहीं मिल पाता। इसी प्रकार, राजपूत (2020) ने जयपुर की मलिन बस्तियों में बालकों एवं बालिकाओं की पोषण स्थिति की तुलना करते हुए यह निष्कर्ष निकाला कि बालिकाएँ अधिक प्रभावित थीं।

साहू (2022) ने रायपुर की गंदी बस्तियों में 0-6 वर्ष के बच्चों की कुपोषण स्थिति पर अध्ययन करते हुए यह बताया कि जिन परिवारों की मासिक आय ₹5000 से कम थी, वहाँ बच्चों में गंभीर कुपोषण की संभावना अधिक थी। यादव एवं शर्मा (2023) ने इंदौर में किए गए अध्ययन में पाया कि आहार विविधता की कमी, अस्वच्छ पेयजल और मातृ शिक्षा की न्यूनता बालकों की पोषण स्थिति को अत्यंत प्रभावित करती है।

विदेशी परिप्रेक्ष्य में UNICEF (2015) की रिपोर्ट में बताया गया कि विश्व स्तर पर गंदी बस्तियों में रहने वाले लगभग 60 प्रतिशत बच्चे स्टन्टिंग व वेस्टिंग जैसे कुपोषण के लक्षणों से पीड़ित हैं। Smith et al. (2017) ने बांग्लादेश की शहरी झुग्गियों में किए गए अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला कि स्वास्थ्य सेवाओं की कमी एवं असंतुलित आहार प्रमुख कारक हैं। Osei et al. (2019) द्वारा घाना में किए गए अध्ययन में यह पाया गया कि कुपोषण की स्थिति सामाजिक संरचना, माता की शिक्षा, तथा सार्वजनिक वितरण प्रणाली से प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित होती है। Chen et al. (2020) ने चीन की मलिन बस्तियों में अध्ययन कर यह निष्कर्ष निकाला कि प्रारंभिक बाल्यावस्था में पोषण की कमी बच्चों के शारीरिक ही नहीं, मानसिक विकास को भी बाधित करती है।
इन समस्त अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि शहरी गंदी बस्तियों में कुपोषण बहुआयामी कारकों के समुच्चय का परिणाम है, जिसमें सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं प्रशासनिक कारण सम्मिलित हैं। अतः इस विषय पर गहन अध्ययन एवं हस्तक्षेप की आवश्यकता है।

उद्देश्य

- दुर्ग जिले की गंदी बस्तियों में 0 से 6 वर्ष के बच्चों में कुपोषण की वर्तमान स्थिति का आकलन करना।
- कुपोषण के प्रमुख कारणों की पहचान करना।
- माता-पिता की शिक्षा, आय एवं आहार संबंधी जानकारी का बच्चों के पोषण स्तर पर प्रभाव जानना।
- कुपोषण उन्मूलन हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

परिकल्पनाएँ

H_0 : गंदी बस्तियों में बच्चों में कुपोषण की स्थिति एवं पारिवारिक सामाजिक-आर्थिक स्थिति में कोई संबंध नहीं है।

शोध पद्धति

शोध की प्रकृति: वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक

नमूना

दुर्ग जिले की गंदी बस्तियों से यादृच्छिक रूप से चयनित 100 बच्चों (0–6 वर्ष आयु वर्ग)

- **डेटा संग्रहण विधि:**
  - बच्चों की ऊँचाई, वजन और आयु के आधार पर पोषण स्थिति का मूल्यांकन
  - माता-पिता से साक्षात्कार
  - आहार संबंधी जानकारी एवं परिवार की सामाजिक-आर्थिक स्थिति की जानकारी
- **मूल्यांकन उपकरण:**

WHO के Child Growth Standards के आधार पर

- डेटा विश्लेषण: प्रतिशत, बार चार्ट, वर्गीकरण

आंकड़ों का विश्लेषण

किसी भी शोध में एकत्र किए गए आंकड़ों का सुव्यवस्थित विश्लेषण अत्यंत आवश्यक होता है, जिससे प्राप्त तथ्यों की सटीकता और वैज्ञानिक प्रमाणिकता सुनिश्चित की जा सके। वर्तमान अध्ययन में दुर्ग जिले की शहरी गंदी बस्तियों में रहने वाले 0 से 6 वर्ष की आयु वर्ग के बच्चों की कुपोषण स्थिति का मूल्यांकन करने हेतु स्वास्थ्य परीक्षण, ऊँचाई-भार मापन, माता-पिता से साक्षात्कार एवं आहार संबंधित सूचनाओं का संग्रह किया गया। एकत्र आँकड़ों को सारगर्भित रूप में प्रस्तुत करने हेतु उन्हें उपयुक्त श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया तथा प्रतिशत विधि का उपयोग करके विश्लेषण किया गया।
इस अध्याय के अंतर्गत कुपोषण के विभिन्न स्तरों — सामान्य, मध्यम तथा गंभीर — के आधार पर बच्चों की स्थिति का निर्धारण किया गया है। इसके साथ ही, सामाजिक-आर्थिक कारकों जैसे माता की शिक्षा, पारिवारिक आय, आंगनबाड़ी सेवाओं की उपलब्धता आदि का बच्चों की पोषण स्थिति पर पड़ने वाले प्रभाव का भी अवलोकन किया गया है। यह विश्लेषण न केवल वर्तमान स्थिति को स्पष्ट करता है, बल्कि समस्या की गंभीरता को आंकने में भी सहायक सिद्ध होता है, जिससे नीतिगत हस्तक्षेप की दिशा तय की जा सकती है।

तालिका-1
दुर्ग जिले की शहरी गंदी बस्तियों में 0 से 6 वर्ष की आयु के बच्चों में कुपोषण स्तर का वितरण

पोषण स्तर की श्रेणी	बच्चों की संख्या	प्रतिशत
सामान्य पोषण स्तर	38	38
मध्यम कुपोषण	41	41
गंभीर कुपोषण	21	21
कुल	**100**	**100**

विश्लेषण:
उपरोक्त आंकड़ों के गहन परीक्षण से यह स्पष्ट होता है कि दुर्ग जिले की शहरी गंदी बस्तियों में निवासरत 0 से 6 वर्ष की आयु वर्ग के कुल 250 बच्चों में से लगभग 62 प्रतिशत बच्चे किसी न किसी प्रकार के कुपोषण से ग्रसित पाए गए। यह आँकड़ा सार्वजनिक स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से अत्यंत गंभीर है, क्योंकि यह दर्शाता है कि इन बस्तियों में प्रत्येक दो में से एक बच्चा पोषण की न्यूनता का शिकार है।
इनमें से 21 प्रतिशत बच्चों में गंभीर कुपोषण (Severe Malnutrition) के लक्षण मिले, जिनमें अत्यधिक अल्पवज़न, कद की कमी (स्टन्टिंग) तथा शरीर में ऊर्जा की गंभीर न्यूनता प्रमुख रही। शेष 41 प्रतिशत बच्चों में मध्यम स्तर का कुपोषण पाया गया, जिसमें सामान्य शारीरिक विकास में बाधा, कमजोरी तथा पोषणयुक्त आहार की निरंतर अनुपलब्धता देखी गई।
वहीं, केवल 38 प्रतिशत बच्चे सामान्य पोषण स्तर पर पाए गए, जो कि कुल जनसंख्या का अल्प भाग है। यह संकेत करता है कि इन क्षेत्रों में बच्चों के लिए समुचित पोषण, स्वास्थ्य सेवाएँ तथा स्वच्छता व्यवस्था व्यापक स्तर पर अनुपलब्ध है। साथ ही, माता-पिता की शिक्षा का अभाव, निम्न आर्थिक स्थिति, स्वास्थ्य जागरूकता की कमी, और आंगनबाड़ी जैसी सेवाओं की अनियमितता इस स्थिति को और अधिक जटिल बनाती है।
इस प्रकार, यह विश्लेषण दर्शाता है कि दुर्ग जिले की गंदी बस्तियों में बच्चों की पोषण स्थिति चिंताजनक है और इसमें सुधार हेतु समन्वित प्रयासों की अत्यंत आवश्यकता है।

प्रमुख निष्कर्ष
दुर्ग जिले की गंदी बस्तियों में रहने वाले 0–6 वर्ष के बच्चों में कुपोषण की दर 62 प्रतिशत पाई गई।
अधिकांश माता-पिता अशिक्षित या अल्पशिक्षित थे तथा परिवार की मासिक आय ₹6000 से कम थी।
बच्चों का आहार एकसमान नहीं था और अधिकांश मामलों में प्रोटीन व सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी देखी गई।
स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच भी सीमित पाई गई।

सुझाव (Suggestions)
आंगनबाड़ी केंद्रों की प्रभावशीलता बढ़ाई जाए।
माता-पिता के लिए पोषण शिक्षा कार्यक्रम आयोजित किए जाएं।
निशुल्क पोषण पूरक आहार योजनाओं की नियमित निगरानी हो।
स्वच्छ जल एवं स्वच्छता सुविधाओं की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए।

निष्कर्ष
प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि दुर्ग जिले की गंदी बस्तियों में कुपोषण एक गंभीर समस्या है जिसका समाधान बहुआयामी दृष्टिकोण से किया जाना आवश्यक है। यदि पोषण, स्वच्छता, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं के बीच समन्वय स्थापित किया जाए तो इस स्थिति में व्यापक सुधार संभव है।

संदर्भ ग्रंथ सूची
1. यूनिसेफ (2015) विश्व के बच्चों की स्थिति: भविष्य की पुनर्कल्पना करें, न्यूयॉर्क: यूनिसेफ प्रकाशन

2. वर्मा, एस. एवं सिंह, आर. (2016) शहरी मलिन यूक्रेन में गरीबों की स्थिति: नोएडा शहर का एक अध्ययन, भारतीय स्वास्थ्य समाजशास्त्र शोध पत्रिका, खंड 12, अंक 2, पृ. 45-54
3. मिश्रा, ए. (2017) दिल्ली की झुग्गी-बस्तियों में गरीबों की सामाजिक पृष्ठभूमि, समाज विज्ञान विश्लेषण*, खंड 8, अंक 1, पृ. 33-47
4. शुक्ला, वी. एवं अन्य, के. (2018) शहर निर्धन बच्चों की पोषण स्थिति और व्यावसायिक सेवाओं की भूमिका, राष्ट्रीय पोषण पत्रिका, खंड 9, अंक 3, पृ. 59-68
5. राजपूत, एस. (2020) झुग्गी-झोपड़ी के बच्चों में पोषण की स्थिति में लैंगिक असमानताएँ: जयपुर से एक अध्ययन, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ पब्लिक हेल्थ रिसर्च, वॉल्यूम, 6(2), पृ. 77-89
6. साहूकार, एम. (2022) राजपूत की मालिन में सोने की लालसा और संसाधनों का अध्ययन, छत्तीसगढ़ सामाजिक अध्ययन पत्रिका, खंड 7, अंक 1, पृ. 21-36
7. यादव, के. एवं शर्मा, डी. (2023) डेकोरेटिव शहर में पोषण स्तर पर सामाजिक-आर्थिक संतुलन का प्रभाव, आधुनिक सामाजिक समीक्षा, खंड 10, अंक 4, पृ. 88-101
8. स्मिथ, एल. एट अल. (2017) ढाका की शहरी मलिन बस्तियों में कुपोषण: एक पोषण मूल्यांकन, एशिया पैसिफिक जर्नल ऑफ क्लिनिकल न्यूट्रिशन*, वॉल्यूम, 16(3), पृ. 314-321
9. ओसेई, ए. एट अल. (2019) घाना में शहरी गरीब समुदायों में कुपोषण के निर्धारक, *सार्वजनिक स्वास्थ्य पोषण*, वॉल्यूम, 22(4), पृ. 556-564
10. चेन, वाई. एट अल. (2020) चीन की शहरी मलिन बस्तियों में पोषण की कमी और बाल विकास, *जर्नल ऑफ पीडियाट्रिक हेल्थ,* 28(1), पृ. 42-51